अमृत वाणी

चिड़ियों की तरह हवा में उड़ना और मछलियों की तरह पानी में तैरना सीखने के बाद अब हमें इन्सानों की तरह जमीन पर चलना सीखना है। -डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन,

चुनाव आयोग की बड़ी उपलब्धि

छत्तीसगढ़ विधानसभा का प्रथम चरण का मतदान 12 नवम्बर को लगभग शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो गया। पांच राज्यों में एक साथ हो रहे विधानसभा चुनावों में से एकमात्र छत्तीसगढ़ में दो चरणों में मतदान की घोषणाकी गई थी जबकि शेष सभी राज्यों में एक ही चरण में 20 नवम्बर को मतदान होना है। छत्तीसगढ़ में भी दूसरे चरण का मतदान 20 नवम्बर को होगा।

छत्तीसगढ़ के पहले चरण के मतदान के लिए मुख्यतः बस्तर संभाग को रखा गया था। इसके अलावा राजनांदगांव जिले में भी इस दिन मतदान संपन्न कराया गया। जाहिर तौर पर नक्सल प्रभावित होने के कारण इन संवेदनशील क्षेत्रों में मतदान की पृथक व्यवस्था की गई थी ताकि सुरक्षित और निष्पक्ष मतदान की समुचित व्यवस्था की जा सके। चुनाव आयोग के लिए भी मतदान का यह पहला चरण किसी बड़ी चुनौति से कम नहीं था। आयोग ने भी सुरक्षित मतदान के लिए अपनी ओर से पूरी ताकत झोकने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

प्रथम चरण के इस मतदान के लिए पूरे देश की नजर इस बार बस्तर पर टिकी हुई थी क्योंकि नक्सलियों ने एक तो बस्तर में चुनाव बहिष्कार का आव्हान किया था उस पर लोगों में दहशत फैलाकर उन्हें मतदान करने से रोकने चुनाव के पूर्व व्यापक हिंसक घटनाओं को भी अंजाम दिया जिसमें कई सुरक्षा बल के जवानों सहित नागरिकों की भी जान गई। नक्सलियों द्वारा फैलाए दहशत, दी जा रही धमकियां आदि के प्रभाव का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि अन्दरूनी क्षेत्रों में प्रचार के लिए जाने से नेता और कार्यकर्ता कतराने लगे जिससे संवेदनशील जिलों में प्रचार अधिकतर शहरी और कस्बाई क्षेत्रों तक ही सीमित होकर रह गया। अहम बात यह है कि बावजूद इन तमाम विसंगतियों के चुनाव आयोग का प्रयास अंततः सफल हो गया। बस्तर के मतदाताओं ने बुलेट का जवाब बैलेट से देते हुए यह सिद्ध कर दिया कि लोकतंत्र पर उनका अटूट भरोसा है। सबसे आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि जिन अतिसंवेदनशील अंदरूनी ग्रामीण क्षेत्रों में पिछले चुनाव में एक भी व्होट नहीं पड़ा था या जहां के ग्रामीणों को व्होट देने जाते समय नक्सलियों ने परेशान किया था वहां भी सारी धमकियों को दर किनार कर ग्रामीणों ने बढ़चढ़कर अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

नक्सली भी चुनाव के दौरान शांत नहीं बैठे थे। मतदान दलों पर हमले से लेकर मतदान केन्द्रों में हिंसा ग्रामीणों का अपहरण जैसे कई हरकतों को उन्होंने अंजाम दिया पर सुरक्षा बलों ने भी मुस्तैदी से उनका मुहतोड़ जबाव दिया जिससे हालांकि दो जवान घायल हुए मगर दो नक्सली भी मारे गए। आयोग की व्यवस्था इतनी चुस्त दुरूस्त थी कि नक्सलियों द्वारा मतदान केन्द्र में तोड़फोड़ किए जाने पर पेड़ के नीचे मतदान कराया गया और लोगों ने उत्साहपूर्व मतदान किया।

इस बार आयोग ने जिस व्यापक पैमाने पर समूचे संभाग में मतदाता जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करवाया था उसका भारी प्रभाव भी मतदाताओं पर दिखायी दिया जिससे लोगों ने अपने मताधिकार के महत्व को समझकर उसका प्रयोग किया। कुल मिलाकर छत्तीसगढ़ में प्रथम चरण के मतदान की सफलत चुनाव आयोग की बड़ी उपलब्धि रही।

ऐसे थे बच्चों के प्यारे चाचा नेहरू

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू की शख्सियत से भला कौन परिचित नहीं होगा। बच्चों से उन्हें इतना लगाव था कि उन्हें प्यार से 'बच्चों के प्यारे चाचा नेहरू' कहा जाने लगा था। अपने कोट की जेब पर हमेशा प्रेम का प्रतीक गुलाब का फूल लगाए रहने वाले पंडित जवाहरलाल नेहरू बच्चों से इतना स्नेह करते थे कि आज भी वह देश के प्रथम प्रधानमंत्री से पहले 'चाचा नेहरू' के रूप में ही अधिक याद किए जाते हैं। दरअसल छोटे-छोटे मासूम बच्चों को देखकर नेहरू जी आत्मविभोर हो जाया करते थे और अपने ऊंचे ओहदे का ख्याल किए बिना झट से बच्चों को गोद में उठा लिया करते थे। बच्चे भी 'चाचा चाचा' कहते उनसे लिपट जाते।

बच्चों के साथ चौहार मनाने में तो चाचा नेहरू को बहुत आनंद आता। होली पर वे बच्चों के साथ रंगों की मस्ती में डूबे होते तो दीवाली पर बच्चों के बीच आतिशबाजी का मजा लेते, मकर संक्रांति पर बच्चों की टोली के साथ पतंग उड़ाते। बच्चों की दुर्दशा देखकर वह मन ही मन तड़प उठते थे और कई बार उनकी यह पीड़ा शब्दों में मुखरित भी होती थी। फुर्सत के समय वह देश-विदेश के बच्चों से जरूर मिला करते और खुद भी बच्चा बनकर उनके साथ तरह-तरह के खेल खेलते। पं. जी के पास देश के कोने-कोने से बच्चों के ढ़ेर सारे खत आते, जिनका जवाब देते हुए वह लिखते, ''बच्चों, परिश्रम से बढ़कर दुनिया में और कोई चीज नहीं, इसलिए तुम जितनी ज्यादा मेहनत करोगे, उतनी ही ज्यादा तुम्हें सफलता मिलेगी और तुम्हारा जीवन खुशियों से महक उठेगा।''

बच्चों के प्रति पंडित नेहरू के इस विशेष लगाव को देखते हुए ही सन् 1956 से उनके जन्मदिन को 'बाल दिवस' के रूप में मनाने का निश्चय किया गया था और तभी से पंडित नेहरू का जन्मदिवस (14 नवम्बर) बाल दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। जब उनके जन्मदिवस को 'बाल दिवस' के रूप में मनाने का निश्चय किया गया था, तब नेहरू जी ने कहा था, ''मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि मेरे देश के बच्चों ने मेरे जन्मदिन को ही 'अपना दिन' बना लिया है। इससे ज्यादा इज्जत और खुशी की बात भला मेरे लिए और क्या हो सकती है कि मेरे मुल्क के बगीचे के इन कोमल फूलों और कोंपलों ने मुझे अपना इतना स्नेह दिया है। मेरी यही कामना है कि इन सबको फलने-फूलने का पर्याप्त अवसर मिले।''

पं. जी के जीवनकाल के अनेक ऐसे संस्मरण एवं किस्से उद्धृत किए जा सकते हैं, जो उनकी महान् शख्सियत और बच्चों के प्रति उनका अपार स्नेह बयान करते हैं।

एक बार नेहरू जी बाल मंदिर देखने गए थे, जहां तीन से पांच साल तक के बच्चे पढ़ते थे। उस समय सभी बच्चे नाच-गाने में मग्न थे। जब पंडित जी वहां पहुंचे और दूर बैठकर बच्चों का नाच-गाना देखने लगे तो एक चार वर्षीया बालिका उनके पास आई और बड़े अनुरोधपूर्वक कहा कि आप भी हमारा साथ दीजिए। पहले तो पंडित जी काफी ना-नुकुर करते रहे। उन्होंने बच्चों को यह कहकर बहलाने का प्रयास भी किया कि इस बार तो नहीं लेकिन अगली बार तुम्हारे साथ जरूर नाचूंगा लेकिन जब उस बच्ची ने जिद पकड़ ली तो आखिर पंडित जी को उस छोटी सी बच्ची के आगे झुकना पड़ा और इतने विशाल देश के प्रधानमंत्री होते हुए भी उन बच्चों की खुशी के लिए उनके साथ वे बच्चा बनकर नाचे।

आज बाल दिवस पर विशेष

जब दीवाली का मौका होता तो वे अपने नाती राजीव और संजय के बाल मित्रों को आनंद भवन बुलाते और उनके साथ दीवाली मनाते हुए कहते कि बच्चों आतिशबाजी चलाकर दीपावली मनाओ और खुशियां बांटो। जो बच्चे पटाखे चलाते हुए डरते, उन्हें कहते कि जो बच्चे इन छोटे-छोटे पटाखों से ही डर जाएंगे, वे आगे चलकर देश के बहादुर सिपाही कैसे बनेंगे? कभी-कभी वह इलाहाबाद में दीवाली की रात बाहर का नजारा देखने निकल पड़ते और रास्ते में गरीब बच्चों को भी मिठाईयां, नए कपड़े और पटाखे देते हुए उनके साथ पटाखे चलाने लगते।

एक बार उन्हें किसी जरूरी काम से दीवाली पर मास्को जाना पड़ा। उस समय तक वहां दीवाली के मौके पर पटाखे नहीं चलाए जाते थे लेकिन पंडित जी की दीवाली तो बच्चों के साथ पटाखे चलाए बिना अधूरी थी। इसलिए उन्होंने वहां भी बच्चों से पटाखे मंगवाए और काफी बच्चों को एकत्रित कर उनके साथ पटाखे चलाने लगे। वहां के बच्चे पटाखों की रंग-बिरंगी रोशनी और धूमधड़ाके से बहुत प्रभावित हुए और खुशी से झूम उठे। उसके बाद से मास्को में भी हर साल दीवाली के मौके पर पटाखे चलाने का दौर शुरू हो गया।

नेहरू जी छोटे थे, तब की एक घटना है। एक बार मैदान में कुछ बच्चे गेंद से खेल रहे थे। खेलते-खेलते गेंद उछलकर लकड़ी के एक खोल में जा गिरी। खोल का मुंह छोटा था, इसलिए बच्चों से बहुत कोशिश के बाद भी गेंद नहीं निकल पा रही थी। जब नेहरू जी ने बच्चों की परेशानी को देखा तो उनसे रहा न गया। उन्होंने उन बच्चों से दो बाल्टी पानी मंगवाया और पानी लकड़ी के उस खोल में भर दिया। फिर क्या था, पानी भरते ही गेंद पानी में ऊपर आ गई और उन्होंने गेद निकालकर बच्चों को दे दी। सभी बच्चे बालक जवाहरलाल की बुद्धिमत्ता से बहुत प्रभावित हुए।

बच्चों के साथ-साथ देश और जनता से भी नेहरू जी बहुत प्यार करते थे और यही कारण था कि अभिकोश देशवासी भी उनसे उतना ही स्नेह करते थे और उन्हें आदर-सम्मान देते थे, जितना बच्चे देते थे। 74 वर्ष की आयु में 27 मई 1964 को पंडित जी स्वर्ग सिधार गए लेकिन अपने निधन से पूर्व अपनी वसीयत में उन्होंने लिखा, ''मेरे मरने के बाद मेरी अस्थियां देश के उन खेतों में बिखेर दी जाएं, जहां भारत का किसान अपना पसीना बहाता है ताकि वे देश की मिट्टी में मिल जाएं।

योगेश कुमार गोयल
(दे लेखक के अपने विचार है)

भारत में तेजी से बढ़ रहा है मधुमेह का ग्राफ

मधुमेह शब्द मधु और मेह दो शब्दों से मिलकर बना है। मधुमेह शब्द में मधु का अर्थ होता है मीठा यानी शक्कर और मेह का अर्थ होता है मूत्र यानी पेशाब। मधुमेह या डाइबिटीज जिसे बोलचाल की भाषा में शुगर भी कहा जाता है आखिर है क्या जिसकी चर्चा आजकल घर घर में सुनी जा रही है। बच्चे से बुजुर्ग तक हर आयु का व्यक्ति इस बीमारी का शिकार हो रहा है। अस्पतालों और जाँच केंद्रों पर मधुमेह के रोगी बड़ी संख्या में देखे जा रहे है। भारत में हर पांचवें व्यक्ति को इस बीमारी ने घेर रखा है।

स्वस्थ व्यक्ति में खाने के पहले ब्लड में ग्लूकोस का लेवल 70 से 100 एमजी डीएल रहता है। खाने के बाद यह लेवल 120-140 एमजी डीएल हो जाता है और फिर धीरे-धीरे कम होता चला जाता है। मधुमेह हो जाने पर यह लेवल सामन्य नहीं हो पाता और बढ़ता जाता है। मधुमेह एक गंभीर मेटाबॉलिक रोग है जो अग्नाशय द्वारा इंसुलिन कम उत्पन्न करने या इंसुलिन न उत्पन्न कर पाने की स्थिति में होती है। इंसुलिन एक हार्मोन है, जो कार्बोहाइड्रेट, फैट और प्रोटीन को पचाने के लिए आवश्यक है। इंसुलिन का काम ग्लूकोज को शरीर की कोशिकाओं में पहुंचाना है। पर्याप्त इंसुलिन के बिना ग्लूकोज शरीर की कोशिकाओं में प्रवेश नहीं कर पाता है, जिससे रक्त में ग्लूकोज का स्तर बढ़ जाता है, इसे ही डायबिटीज या मधुमेह कहते हैं। बार-बार पेशाब लगना, ज्यादा प्यास और भूख लगना, जल्दी थकान और आखों की रोशनी कम होना, घावों का जल्दी नहीं भरना, अंगुलियों व पैर के अंगूठे में दर्द रहना, वजन कम होना, कमजोरी व अनिद्रा का शिकार होना आदि मधुमेह के प्रमुख लक्षण हैं।

मधुमेह पहले अमीरों की बीमारी मानी जाती थी, लेकिन आज इसने हर उम्र और आय वर्ग को अपनी चपेट में ले लिया है। एक दशक पहले भारत में मधुमेह होने की औसत उम्र 40 साल थी, जो अब 25-30 साल हो चुकी है। भारत में मधुमेह रोगियों की स्थिति पर नजर डाले तो आकड़े बेहद भयानक और चौकाने वाले हैं। 1991 में भारत में मधुमेह रोगियों की संख्या 2 करोड़ के आस-पास थी जो 2006 में बढ़कर 4 करोड़ 20 लाख हो गई। भारत में 2015 में लगभग 7 करोड़ लोग इससे पीडित थे। 2018 में यह संख्या आठ करोड़ को पार कर गई। अंतरराष्ट्रीय डायबिटीज फेडरेशन की रिपोर्ट में बताया गया है कि दुनिया में मधुमेह रोगियों की संख्या 2030 तक 55 करोड़ पार कर जाएगी।

भारत को मधुमेह की खान कहा जाता है। मधुमेह रोग वैश्विक और गैर. संचारी महामारी का रूप धारण कर चुका है। भारत में व्यस्त एवं भागमभाग वाली जिंदगी, खानपान की खराबी तनावपूर्ण जीवन, स्थूल जीवन शैली, शीतल पेय का सेवन, धूम्रपान, व्यायाम कम करने की आदत और जंक फुड का अधिक सेवन, मोटापा के कारण मधुमेह का प्रकोप बढ़ रहा है। बच्चों का अब खेलकूद के प्रति रूझान घटना और मोबाइल कंप्यूटर खेलों की तरफबढ़ना टीवी से चिपके रहना और जंक फूड खाने से बच्चे भी इस रोग के शिकार हो रहे हैं।

मधुमेह रोगियों की संख्या में निरन्तर हो रही वृद्धि को देखते हुए 1991 में विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं इण्टरनेशनल डायबिटीज फेडेरेशन ने प्रति वर्ष 14 नवम्बर को विश्व मधुमेह दिवस आयोजित करने का निर्णय लिया । विश्व मधुमेह दिवस प्रतिवर्ष 14 नवंबर को सर प्रेडरिक बैंटिंग के जन्मदिवस पर मनाया जाता है । जिन्होंने अपने सहयोगी के साथ मिलकर इंसुलिन की खोज की थी तथा जिसका पहली बार मनुष्यों के ऊपर उपयोग किया गया था। यह दिवस प्रतिवर्ष सारे विश्व में मधुमेह से प्रभावित बढ़ते रोगियों में जागरूक फैलाने के लिए मनाया जाता है। मधुमेह एक ऐसी बीमारी है जिससे गरीब और अमीर सभी वर्गों के व्यक्ति सामान रूप से प्रभावित है। मगर इसकी मार गरीबों पर सबसे ज्यादा पड़ती है। मधुमेह को खत्म तो नहीं किया जा सकता है पर उसे नियंत्रित अवश्य किया जा सकता है। इसके लिए कई इलाज है पर प्राकृतिक इलाज सबसे बेहतर है, जिसमे योग की बड़ी महत्ता है। रोज सुबह उठकर प्राणायाम, व्यायाम व आसन करने से इस पर नियंत्रण किया जा सकता है। मधुमेह वर्तमान में हमारी जिंदगानी का एक अहम् हिस्सा बन गयी है। यदि आपको मधुमेह है तो इससे डरने की कोई जरूरत नहीं है। जरूरत है तो सावधानी और सजगता की। खानपान और अपनी लाइफ स्टाइल में बदलाव की। आप डरेंगे तो यह आपको डराएगी। मगर आप सावचेत रहे तो इसका मुकाबला आसानी से कर अपनी जिंदगी को बेहतर बना सकेंगे।

बाल मुकुन्द ओझा
(दे लेखक के अपने विचार है)

मान न मान मैं तेरा मेहमान

राजधानी दिल्ली में यमुना नदी पर बनाए गए बहुप्रतीक्षित सिग्नेचर ब्रिज का उद्घाटन दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल द्वारा गत 4 नवंबर को किया गया। इस विचित्र पुल के मुख्य स्तंभ की ऊंचाई 154 मीटर है जो भारत में इस प्रकार के बने पुलों में सबसे अधिक ऊंचा है। संयोग से इस पुल के उद्घटन से मात्र चार दिन पूर्व ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात के नर्मदा जिले में भारत के पूर्व गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की विश्व की सबसे ऊंची 182 मीटर की प्रतिमा को जनता को समर्पित किया। यहां यह बताने की जरूरत नहीं कि इन दोनों योजनाओं में कौन सी योजना जनहितकारी है और किस योजना के माध्यम से केवल धन की बरबादी की गई है। बहरहालए इन प्रश्नों से अलग हटकर एक दूसरा प्रश्न यह है कि जहां सरदार पटेल की प्रतिमा का उद्घाटन पूरी शांति व सद्भाव के साथ संपन्न हुआ वहीं क्या वजह थी कि दिल्ली सरकार द्वारा निर्मित किए गए उद्घाटन समारोह में हंगामाएआशांति फैलाने तथा अराजकता जैसा वातावरण बनाने की कोशिश की गईघ् आखिर इस प्रकार के वीडियो व समाचार क्यों प्रकाशित व प्रसारित हुए जिसमें यह देखा गया कि दिल्ली के स्थानीय सांसद एवं दिल्ली प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष मनोज तिवारी पुलिस अधिकारियों के साथ धक्कामुक्की कर रहे हैंएपुलिस के आला अधिकारियों को धमका रहे हैं यहां तक कि पुलिस अधिकारी पर हाथ उठाते हुए भी उनकी वीडियो वायरल हुई है। यदि आम आदमी पार्टी के नेताओं की मानें तो उनका तो सीधा आरोप है कि मनोज तिवारी ने गैर आमंत्रित तरीके से ज़बरदस्ती स्टेज पर पहुंचने की तथा सरकारी कार्यक्रम में बाधा पहुंचाने की कोशिश की। आप की एक नेता ने तो यहां तक आरोप लगाया है कि तिवारी दंगे की स्थिति पैदा करने के लिए समारोह स्थल पर गए थे। इस बिन बुलाए मेहमान के साथ आप पार्टी के एक विधायक की गाली.गलौच व धक्कामुक्की की खबरें भी हैं।

सवाल यह है कि देश के विकास तथा जन समस्याओं से सीधे तौर पर जुड़े हुए इस पूरे कार्यक्रम में किसी विशिष्ट व्यक्ति की एक अनामंत्रित अतिथि के रूप में जाने की जरूरत ही क्या थीए परंतु इसी सवाल के साथ दूसरा सवाल यह भी है कि एक स्थानीय सांसद होने के नाते आखिर दिल्ली सरकार द्वारा मनोज तिवारी को आमंत्रित क्यों नहीं किया गयाघ् क्या वजह है कि अलग.अलग राजनैतिक दलों के नेताओं के मध्य कड़वाहट अब इस निचले स्तर पर जा पहुंची है कि मेज़बानी करने वाला अपने आलोचकों को अथवा अपने विपक्षी को किसी कार्यक्रम में आमंत्रित नहीं करना चाहता तो दूसरी ओर नेताओं की बेहयाई व बेशर्मी का पैमाना भी इतना ऊंचा हो गया है कि श्मान न मान मैं तेरा मेहमानश् की कहावत को चरितार्थ करते हुए वे स्वयं ही कार्यक्रम में पहुंच जाते हैं। चाहे इसके बदले में उन्हें धक्कामुक्कीएगालीगलौचएअपमान अथवा पुलिस थाने तक का सामना क्यों न करना पड़ेघ् वैसे भी विशेष तौर पर मनोज तिवारी के साथ दिल्ली व दिल्ली के बाहर भी कई बार इस प्रकार की घटनाएं हो चुकी हैं कि उन्हें लोगों के हाथों से अपमानित होना पड़ा है। संभव है कहीं जनता ने उनके साथ ज्यादती भी की हो परंतु हर जगह मनोज तिवारी सही हों और जनता की गलती हो ऐसा भी संभव नहीं है। खासतौर पर सिग्नेचर ब्रिज के उद्घाटन के समय मनोज तिवारी की उद्घाटन समारोह में उनके साथियों के साथ उपस्थिति तथा वहां पैदा किए गए हंगामे की सूरत तो इसी बात का सुबूत देती है।

अब आईए मनोज तिवारी को आमंत्रित न किए जाने की पृष्ठभूमि पर भी नज़र डाल लें। याद कीजिए 25 दिसंबर 2017 को जिस समय दिल्ली मैट्रो मजेंटा लाईन का उद्घाटन प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया था उस समय विशिष्ट अतिथियों की सूची में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल राम नाईक तथा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का नाम तो थाएवे लोग उद्घाटन के समय मंच पर भी आसीन थे परंतु दिल्ली सरकार की मैट्रो परियोजना में बराबर की साझेदारी होने के बावजूद राज्य के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को उस उद्घाटन समारोह में आमंत्रित किया जाना उचित नहीं समझा गयाघ् आखिर क्योंघ् अब आईए ज़रा इसके पहले अर्थात् 2009 में भी झांककर देखें जबकि पहली मैट्रो ट्रेन ने नोएडा क्षेत्र में प्रवेश करते हुए उत्तर प्रदेश में अपनी प्रविष्टि दर्ज की थी। उस समय दिल्ली की तत्कालीन मुख्यमंत्री शीला दीक्षित तथा उत्तर प्रदेश की उस समय की मुख्यमंत्री रही मायावती दोनों ही उद्घाटन समारोह में एक साथ नज़र आए थे। ऐसे में 25 दिसंबर 2017 में दिल्ली मैट्रो मजेंटा लाईन के उद्घाटन अवसर पर योगी आदित्यनाथ व राज्यपाल नाईक को आमंत्रित करना तथा अरविंद केजरीवाल को आमंत्रित न करना राजनीति में गिरावट तथा संकीर्णता की दलील पेश करता है। निश्चित रूप से मनोज तिवारी को भी ऐसे ही फैसलों का परिणाम भुगतना पड़ा है। वैसे भी मनोज तिवारी अरविंद केजरीवाल व उनकी सरकार द्वारा किए जा रहे किसी भी विकास कार्य की सदैव आलोचना करने में काफी मुखर रहा करते हैं। बिना विरोध की बात के भी विरोध करते रहना मनोज तिवारी के कर्तव्यों में शामिल है। आप नेताओं के अनुसार वे कई बार अपने चंद साथियों के साथ दिल्ली की सांप्रदायिक सद्भाव की ?फिज़ा को भी खराब करने की कोशिश कर चुके हैं।

निर्मल रानी
(दे लेखक के अपने विचार है)

राज काज

कोई फार्मूला नहीं आएगा काम

अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में लगातार गिरावट के बावजूद पेट्रोलियम पदार्थों में हुए इजाफे को देखते हुएए पीएमके नेता एस रामदास ने 19 रुपए दाम सस्ते करने का फार्मूला बताया है। इससे समझा जा रहा है कि विपक्ष के हमले से केंद्र सरकार अपने आपको बचाने में सफल रहेगी। बहरहाल जानकार तो यही कहते हैं कि हर कोई अपने तरीके से पेट्रोल.डीजल की कीमतें कम करने की बात कहते रहते हैंए लेकिन जब तक सरकार की मंशा नहीं होगी तब कीमत में गिरावट नहीं आ सकती है। यहां रामदास ने फार्मूला बताया वहां विपक्ष ने कहना शुरू कर दिया कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में गिरावट के बावजूद पेट्रोल और डीजल समेत रसोई गैस की कीमतों में बढ़ोत्तरी करना सही मायने में उपभोक्ताओं की जेब पर डाका डालने के बराबर है। समीक्षकों की मानें तो पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में बेहिसाब बढ़ोतरी पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों समेत आम चुनाव पर भी विपरीत असर डालेगीए इसे सरकार जितनी जल्द समझ ले उतना भाजपा के लिए फायदेमंद होगा।

सूची जारी करने में भाजपा आगे

मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस को सूची जारी करने में पीछे छोड़ दिया था अब राजस्थान से खबर आ रही है कि बीजेपी ने यहां भी 131 उम्मीदवारों की सूची जारी कर यह मैदान मार लिया है। भाजपा की इस सूची में 85 मौजूदा विधायक शामिल हैंए जबकि 25 नए चेहरों पर पार्टी ने भरोसा जताया है। इसे देखते हुए जहां भाजपा नेता कह रहे हैं कि कांग्रेस के पास कोई मुद्दा नहीं है और न ही उसके पास नेता ही बचे हैंए इसलिए भाजपा अपने नेताओं को आगे करके यह चुनाव भी आसानी से निकाल लेगी। राज्य में मुख्य विपक्षी कांग्रेस का कहना है कि राजस्थान की जनता मौजूदा सरकार से त्रस्त है और इसलिए वह सबक सिखाने के लिए कांग्रेस को जीत दिलवाने का मन बना चुकी है। अब देखना यह है कि सूची पहले जारी करके जो विश्वास भाजपा ने अपने उम्मीदवारों पर दिखाया है वह उसमें खरे उतरते हैं या नहीं, क्योंकि कांग्रेस भी पूरे दम.खम के साथ चुनाव मैदान में दस्तक दे चुकी है।